भौतिकवाद —

दार्शनिक एकत्ववाद का एक प्रकार है, जिसका यह मत है कि प्रकृति में पदार्थ ही मूल द्रव्य है, और साथ ही, सभी दृग्विषय, जिसमें मानसिक दृग्विषय और चेतना भी शामिल है, भौतिक परस्पर संक्रिया के परिणाम है।

भौतिकवाद का भौतिकवाद से गहरा सम्बन्ध है, जिसका यह मत है कि जो कुछ भी अस्तित्व में है, वह अंततः भौतिक है। भौतिक विज्ञानों की खोज के साथ दार्शनिक भौतिकतावाद भौतिकवाद से क्रम विकसित हुआ, ताकि सिर्फ सामान्य पदार्थ के बजाए भौतिकता के अधिक परिष्कृत विचारों को समाहित किया जा सके, जैसे कि दिक्-काल, भौतिक ऊर्जाएँ और बल, डार्क मैटर आदि। अतः कुछ लोग भौतिकवाद से बढ़कर भौतिकतावाद शब्द को वरीयता देते है जबकि कुछ इन शब्दों का प्रयोग समानार्थी शब्दों के रूप में करते हैं।

भौतिकवाद या भौतिकतावाद से विरुद्ध दर्शनों में आदर्शवाद, बहुलवाद, द्वैतवाद और एकत्ववाद के कुछ प्रकार सम्मिलित हैं।

आज तो विज्ञान विषयक स्त्रोत साहित्य हमें उपलब्ध है, उस पर विज्ञानेतर विचारों और मतों का ऊबा देनेवाला घालमेल किया गया और कई ऐसे क्षेपक जोड़े गए जो उसके मूल स्वर से एकदम भिन्न और हास्यास्पद होने की प्रतीति देते हैं। परन्तु इन ग्रंथों का बुद्धिपूर्वक और सतर्क अध्ययन हमें हमारे पूर्वजों की वस्तुपरक और भौतिकवादी धारणा का स्पष्ट परिचय देता है। इस कथन का पक्षपोषण के लिए अब आगे हम उपलब्ध प्राचीन भारतीय वैज्ञानिक ग्रंथों के मूल स्वर का भौतिकवादी विचार-धारा से पोषित होने का प्रमाण देंगे।